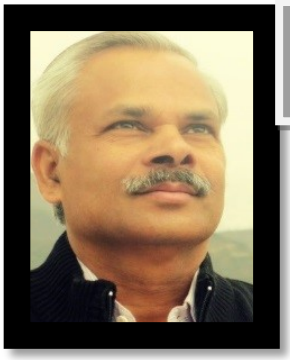

त्रिलोक सिंह ठकुरेला

नगला मिश्रिया, हाथरस
उत्तर प्रदेश

मैं तुम्हें प्रतिदान इसका

यदि इशारे हों तुम्हारे, प्रिये ! मैं गाता रहूँगा।

प्रेम-पथ का पथिक हूँ मैं,
प्रेम हो साकार तुम,
मुझ अकिंचन को हमेशा,
बाँटती हो प्यार तुम,
पात्र लेकर रिक्त, द्वारे नित्य ही आता रहूँगा।

सरस है जीवन तुम्हीं से,
हर दिवस मधुमास है,
रात का हर पल, तुम्हारे-
प्रेम का ही रास है,
वेणु का हर सुर मधुरतम तुम्हीं से पाता रहूँगा।

खिलेंगे जब, तक तुम्हारे-
युगल नयनों में कमल,
तभी तक सुखमय रहेंगे,
जिन्दगी के चार पल,
मैं मधुप हर पंखुडी पर बैठ मुस्काता रहूँगा।

प्रेम से जीवन मेरा
तुमने संवारा जिस तरह,
मैं तुम्हें प्रतिदान इसका
दे सकूँगा किस तरह
नित्य बलिहारी तुम्हारे प्रेम पर जाता रहूँगा।।

मन की वीणा के तारों को

जीवन में रस छलकाती है, प्रिये ! प्रेम-पाती ।
तुम मिलतीं तो जैसे सुख की बारिश आ जाती ।।

प्रिये ! मिलन की शुभ वेला में कण-कण मुस्काता,
चार हुईं आँखों से बरबस नेह बरस जाता,
मन-आँगन का हर कोना आलोकित हो जाता,
स्वयं दीप बन जाता मैं, यदि बनतीं तुम बाती ।

मधु साने से शब्द तुम्हारे, जीवन-अर्थ बने,
प्रेम-पाश की जंजीरों में और समर्थ बने,
आशाओं की डोर, रोज़ बल प्राणों को देती,
सम्बल बन कर रहती तेरी यादों की थाती ।

जिसने आकर कानों में मधु-वेणु बजाई है,
वह मदमाती पवन तुम्हीं से मिलकर आई है,
मन की वीणा के तारों को झंकृत सा करती,
नई रागिनी छेड़ रही है, मन में इठलाती ।

भाव-अभावों की भी अपनी ही मजबूरी है,
कोई भी क्या करे, हाय ! विधि-निर्मित दूरी है,
रोम-रोम हर्षित हो जाता, सपने जी जाते,
जब तेरी आँखों की भाषा गीत नये गाती ।
तुम मिलतीं तो जैसे सुख की बारिश आ जाती ।।